जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मानुभूति की दशा शुद्धभाव है और आत्म-अनुभूति प्राप्त करने का विकल्प शुभभाव ।
- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 24

वर्ष : 26, अंक : 18
दिसम्बर (द्वितीय) 2003
सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ कविवर सन्तलालजी की धर्मनगरी में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की सत्प्रेरणा से प्रेरित दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के अथक् प्रयासों से श्री चौबीस तीर्थंकर जिनालय एवं परमागम मंदिर का निर्माण किया गया।

नवनिर्मित जिनमंदिर हेतु मूलनायक भगवान नेमिनाथ का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 18 नवम्बर से 24 नवम्बर 2003 तक श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं बाल ब्र.पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने अपने अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों के माध्यम से समाज को संदेश दिया कि 'यह पंचकल्याणक महोत्सव कानजीस्वामी का नहीं है, ये जयपुर, सोनगढ़ या अलीगढ़वालों का भी नहीं है; बल्कि यह पंचकल्याणक तो भगवान नेमिनाथ का है; अत: हम अपने राग-द्वेषरूपी कषायों के वशीभूत होकर कहीं इस मनुष्य भव में ऐसे महोत्सव के लाभ से वंचित न हो जायें।' उन्होंने अपने प्रवचनों में तीर्थंकर देव के समवशरण एवं वीतराग भगवान की वीतरागवाणी का महत्त्व भी बताया।

इसके अतिरिक्त पण्डित प्रकाशचन्दजी जैन ज्योतिर्विद मैनपुरी, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित अभिनयजी जैन जबलपुर आदि विद्वानों का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने किया।

दिनांक 17 नवम्बर को प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वजारोहण डॉ. जे. डी. जैन परिवार, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री प्रमोदजी जैन, प्रतिष्ठामंच का उद्घाटन श्री जितेन्द्रजी सर्राफ तथा यागमण्डल विधान का उद्घाटन श्री सी.एस. जैन देहरादून ने किया।

महोत्सव में नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती सुधाजी एवं श्री राजकुमारजी जैन, सहारनपुर को मिला।

इस अवसर पर लगभग 70 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 40 हजार रुपये के सी.डी. एवं ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

सम्पूर्ण महोत्सव में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़ एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा मेरठ का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

ह्न महामंत्री, संदीपकुमार जैन

महाराष्ट्र में तत्त्वप्रचार योजना

नागपुर (महा.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेश में भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का डंका बज रहा हैं; किन्तु ऐसा प्रतीत होता हैं कि महाराष्ट्र प्रान्त में इसका प्रचार अत्यन्त कम है, जबकी महाराष्ट्र प्रान्त में हजारों की तादाद वालें जैनीयों के सैंकड़ों गाँव हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए जैन युवा फैडरेशन, नागपुर के तत्त्वावधान में एक ऐसी योजना संचालित करने का विचार किया जा रहा हैं कि जिसके द्वारा महाराष्ट्र प्रान्त में भी तत्त्वज्ञान का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके।

यह कार्य अनेक विद्वानों के सहयोग बिना संभव नहीं है, अत: जो भी विद्वान इस योजना में अपना सहयोग देना चाहते हैं, वे अपना सुझाव, मार्गदर्शन व उनका स्वयं का क्या सहयोग रहेगा? तथा इस कार्य के लिए वे अपना कितना समय, कब, किस क्षेत्र में दे सकेंगे ह्न शीघ्र ही हमें निम्न पते पर सूचित करें।

विद्वानों की स्वीकृति सुझाव आदि प्राप्त होने पर फरवरी माह में इस सन्दर्भ में विद्वान एवं समर्पित कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित कर इस योजना को अंतिमरूप दिया जायेगा। जिसकी सूचना यथासमय प्रकाशित की जायेगी।

निवेदक
विश्वलोचन जैनी
हीरा कुटीर, मस्का साथ, नागपुर -02 (महा.)
फोन -0712-2762624, मो.-9422146642

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा 41

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

केतुमति का पागलपन दूर होते ही वहाँ छिपे जरासंघ के गुप्तचरों ने सुनियोजित योजना के अनुसार वसुदेव को पकड़ लिया और उन्हें राजगृह ले गये।

रास्ते में राजपुरुषों से वसुदेव ने पूछा ह्न ''मुझे किस अपराध में पकड़कर ले जाया जा रहा है?'' तब उन्होंने बताया कि ह्न राजा जरासंध को किसी ह्न भविष्यवेत्ता द्वारा यह बताया गया है कि जो व्यक्ति केतुमती के पिशाच का निग्रह करेगा, वह राजा को घात करनेवाले शत्रु का पिता होगा; अतः 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' यह सोचकर राजा की आज्ञा से आपको वधस्थान पर ले जाया जा रहा है।

परन्तु *''किसी के सोचने से क्या होता है, होना तो कुछ और ही था''* वसुदेव वधस्थान पर पहुँचे ही थे कि विद्याधर उन्हें झपटकर आकाश में ले गया और उस विद्याधर ने कुमार वसुदेव से कहा ह्न मैं प्रभावती का पितामह हूँ। भागीरथ मेरा नाम है। मैं तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करनेवाला हूँ। हे नीतिज्ञ! मैं तुम्हें प्रभावती के पास ले चलता हूँ ह्न ऐसा कहकर वे प्रभावती के पास ले गये और वहाँ दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। *जिसकी आयु शेष हो और पुण्य का उदय हो, उसे दुनियाँ की बड़ी से बड़ी ताकत नष्ट एवं दुःखी नहीं कर सकती।* इस घटना से हम निर्भय भी रह सकते हैं और पुण्य के कार्य करने की प्रेरणा भी पा सकते हैं; किन्तु हम अहंकार में इतने पागल हैं कि ऐसा विचार ही नहीं आता। अस्तु ह्न

वसुदेव-प्रभावती पूर्व परिचित, स्नेह से एक-दूसरे के प्रति आकर्षित तो थे ही। अब वर-वधू बनकर दाम्पत्य जीवन के सुख में समर्पित हो गये।

पुण्य-पाप का कुछ ऐसा ही विचित्र स्वभाव है कि उनके उदय में जीव संयोग-वियोगों के झूले में इसीतरह झूलता हुआ संसार सागर में गोते खाता रहता है। यदि सदा के लिए परम अतीन्द्रिय आनन्द, निराबाध सुख प्राप्त करना हो तो हमें पुण्य-पाप से पार शुद्धोपयोगमय होना होगा तथा आत्मा के शुद्धस्वरूप को जानकर, उसमें ही रुचि और परिणति करना होगी।

कुमार वसुदेव द्वारा अनेक विवाह किए गये, जिनमें कुछ प्रमुख विवाहों की कथा उल्लेखनीय है जो इस प्रकार है ह्न जब कुमार वसुदेव प्रभावती के साथ महल में सो रहे थे, तब उनका शत्रु सूर्पक उन्हें सोई हुई हालत में ही अपहरण करके आकाश में ले गया। कुमार की नींद खुलते ही उन दोनों में संघर्ष हुआ। सूर्पक जब हारने लगा तो उसने कुमार को नीचे गिरा दिया। संयोग से वे गोदावरी कुण्ड में गिरे, पर पुण्ययोग से घायल नहीं हुए। वहाँ से निकलकर वे कुण्डलपुर ग्राम पहुँचे वहाँ के राजा पद्मरथ की कन्या की यह प्रतिज्ञा थी कि जो मुझे माला गूँथने की कला में पराजित करेगा मैं उससे ही विवाह करूँगी।

कुमार वसुदेव ने उसे माला गूँथने का कौशल दिखाकर उससे विवाह कर लिया। सचमुच श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव बहुत ही पुण्यवान, बलशाली और प्रतापी पुरुष थे। उनके चक्रवर्ती जैसा महान पुण्य और पौरुष था, परोपकारी भी थे; अतः जहाँ भी गये, उनके पुण्य ने उनका पूरा साथ दिया। इसीप्रकार की दूसरी घटना नीलकंठ के अपहरण द्वारा हुई।

इसबार कुमार चम्पापुर के तालाब में गिरे। वहाँ से भी सकुशल निकलकर चम्पापुर नगर में गये। उन्होंने वहाँ के मंत्री की पुत्री से विवाह किया।

यहाँ वही पूर्व का सूर्पक फिर से हरकर ले गया। इस बार उससे छूटकर भागीरथी नदी में गिरे। पुण्य योग से वहाँ से भी बच कर अटवी में घूमते हुए उन्हें म्लेच्छराज की 'जरा' नामक कन्या से सर्म्पक हुआ और उससे विवाह हुआ। और वहीं बहुतकाल तक रहे। इस म्लेच्छ कन्या से उनका जरतकुमार नामक पुत्र हुआ। किसी ने उसी समय कुमार ने अवन्ति सुन्दरी और शूरसेना नामक कन्याओं को भी प्राप्त किया।

तदनन्तर *जीवद्यशा* कन्या को प्राप्त करने के साथ और भी अनेक स्त्रियों से विवाह सम्पन्न करके कुमार अरिष्टपुर नामक नगर पहुँचे। उससमय वहाँ का राजा धीर-वीर रुचिर था। उसकी मिला नाम की रानी एवं उन दोनों से नीतिवेत्ता, रणनिपुण, महापराक्रमी एवं शस्त्र-शास्त्र का अभ्यासी हिरण्य नाम का ज्येष्ठ पुत्र था और कलाओं की परगामिनी, रूप तथा यौवन को धारण करनेवाली रोहणी नामक पुत्री थी। रोहणी के स्वयंवर में जरासन्ध सहित समुद्रविजय आदि समस्त राजा आये। भाइयों की पहचान में न आ सके ह्न ऐसा वेष धारण कर कुमार वसुदेव भी स्वयंवर में गये।

सम्मानपूर्वक मधुर वचन बोलने में चतुर धाय ने प्रत्येक राजा के पास कन्या को ले जाकर परिचय कराते हुए वरण करने के लिए अनुशंसित किया; किन्तु राज कन्या ने किसी के गले में वरमाला नहीं पहनाई। राजाओं की पंक्ति में बैठे सर्वप्रथम जरासन्ध की नाना प्रकार से महिमा मण्डित करते हुए वरने के लिए प्रेरित किया। जब कन्या की रुचि नहीं देखी तो क्रमशः जरासंध के पुत्र के पास गई, फिर मथुरा के राजा उग्रसेन, उग्रसेन के बाद सौर्यपुर के स्वामी समुद्रविजय आदि से परिचय कराया। फिर स्वयंवर सभा में बैठे एक से बढ़कर एक ह्न अनेक राजाओं से परिचय कराया और कहा कि स्वयंवर की सफलता की चिंता में तेरे माता-पिता की नींद हराम हो रही है; अतः तू शीघ्र निर्णय कर!

कन्या ने उत्तर में कहा ह्न हे धाय माँ! इन राजाओं में किसी पर भी मेरा मन अनुरक्त नहीं हो रहा है। देखते ही प्रथम दृष्टि में ही जिस पर आन्तरिक स्नेह उमड़ने लगता है, वर-कन्या ह्न दोनों को संतोष होता है उसे ही वरण किया जा सकता है। इन राजाओं पर मुझे न राग उमड़ता है और न द्वेष ही है। इनके प्रति मेरे मन में मात्र उपेक्षा या अरुचि है; अतः मैं इनमें से किसी का भी वरण नहीं कर सकती। ***(क्रमशः)***

सूचना – पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित इस हरिवंशकथा नामक पुस्तक का द्वितीय संशोधित संस्करण भी छपकर तैयार हो गया है। इच्छुक महानुभाव निम्न पते से मंगा सकते हैं। **प्राप्तिस्थल :** पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर। **मूल्य :** 25/-रुपये

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

26

● देव-शास्त्र-गुरु के साथ एकत्वबुद्धि मिथ्यात्व है तथा उस ओर के राग में एकत्वबुद्धि भी मिथ्यात्व है और उससे भी आगे लें तो देव-शास्त्र-गुरु के निमित्त से अपने उपादान से जो परलक्षी ज्ञान हुआ, उस ज्ञान में एकत्वबुद्धि भी मिथ्यात्व है।

● मैं अन्य जीव को मार सकता हूँ, जिला सकता हूँ, दूसरे जीवों को भोजनादि की सुविधा देकर सुखी कर सकता हूँ अथवा दूसरे जीवों को असुविधा देकर दु:खी कर सकता हूँ यह मान्यता मिथ्यात्व है। एक तिनके के दो टुकड़े कर सकता हूँ, हाथ की अंगुली हिला सकता हूँ, वाणी बोल सकता हूँ, रोटी का कौर तोड़ सकता हूँ - इसप्रकार परद्रव्य की क्रिया का कर्ता मैं हूँ - ऐसी मान्यता मिथ्यादृष्टि की है। ऐसे जीव त्रिलोक के सभी पदार्थों की क्रिया मैं कर सकता हूँ - ऐसी मान्यता से मिथ्यात्वरूप महापाप का बंध करते हैं, क्योंकि वे जीव अज्ञान में जगत की किसी भी वस्तु को अपनी माने बिना नहीं रहते।

● प्रभु ! तू तो सर्व के ज्ञाता-दृष्टास्वरूप से पूर्ण है; परन्तु अपने पूर्ण स्वरूप को न जानकर मात्र ज्ञेय को जानने-देखने में रुक गया है, यही तेरा अपराध है।

● एक समय की सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की निर्मल पर्याय रत्नत्रय है और उसके फल में प्राप्त केवलज्ञान पर्याय महारत्न है तथा ज्ञानगुण की एक समय की वह पर्याय महारत्न है ... तो ऐसी अनन्तानन्त पर्यायों का धारक ज्ञानगुण वह महारत्न है। ऐसे ज्ञान-आनन्दादि अनन्त गुणरूपी महान-महान रत्नों का धारक आत्मद्रव्य तो महारत्नों से भरपूर समुद्र है, उसकी महिमा का क्या कहना ? अहो ! उसकी महिमा वचनातीत है। वह अपरम्पार महिमा अनुभवगम्य ही है।

● अपनी महिमा कर, अन्य सबकी महिमा छोड़ - ऐसा कहा जाता है; परन्तु मैं शुद्ध हूँ तथा परिपूर्ण हूँ - ऐसी महिमा आती है, वह भी विकल्पात्मक महिमा है। वास्तव में स्वसन्मुख होने पर ही अन्तरोन्मुखता होती है।

● वर्तमान वर्तती इस काल की ज्ञानपर्याय त्रैकालिक ज्ञायक का ही एक अंश है ? उसे अन्तर्मुख करने पर 'चैतन्यहीरा' ज्ञान में आता है। अवयव द्वारा अवयवी की प्रतीति होती है; ज्ञान की पर्याय को अन्तरोन्मुख करके देख तो तेरा चैतन्यसूर्य तेरी प्रतीति में आयेगा, उसका प्रकाश तुझे दिखाई देगा।

● आत्मा परमात्मा स्वरूप ही है। परमात्मा तेरे निकट ही है। अरे ! तू स्वयं ही परमात्मा है। उसके सन्मुख तो देखता नहीं और धुएँ को पकड़ने का मिथ्या प्रयत्न करता है। भाई ! संतों ने मार्ग सरल कर दिया है, तू जहाँ है, वहाँ जा ! जहाँ नहीं है, वहाँ से हट जा !

● मैं परम स्वाधीन हूँ। मुझे अपने कार्य के लिये अन्य साधनों का आश्रय नहीं लेना पड़ता; इसलिये मैं परम सुखी हूँ - ऐसा विश्वास पहले प्रगट कर ! भगवान आत्मा स्वसत्ता के विश्वास द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। अपना ज्ञानादि अनन्तभावों से भरपूर स्वभाव अपने स्वभाव के साधन से ही प्रगट होता है। पर के साधन द्वारा अपना स्वभाव प्रगट नहीं होता।

● जैसे कोई बच्चा रोता हो तो उसका पिता कहता है कि - बेटा रो मत, देख तेरा पेड़ा पूरे का पूरा रखा है .. खुश हो जा ! उसीप्रकार आचार्यदेव भव्य से कहते हैं कि हे आत्मा ! तू प्रसन्न हो ! आनन्द मना ! देख तेरा आत्मा त्रिकाल ज्यों का त्यों शुद्ध ही है। शरीरादि या रागादि ने आत्मा को स्पर्श तक नहीं किया है - छुआ तक नहीं है, रागादि तो ऊपर-ऊपर ही लोट रहे हैं, इसलिये भाई तू खुश हो ! और प्रसन्न होकर देख ! तेरा आत्मा शुद्ध चैतन्यघन ही है।

● परिणाम द्वारा परिणाम को नहीं; बल्कि परिणाम द्वारा ध्रुव को देख ! पर्याय से पर को न देख; अपितु भगवान पूर्णानन्द के नाथ प्रभु को देख। उसे देखकर अपनी दृष्टि वहाँ लगा। छह महिने तक ऐसा अभयास कर ! अन्तर्मुख तत्त्व को अंतरंग के परिणाम से देख ! अंतर में प्रभु-परमेश्वर स्वयं विराजमान है उसका एकबार छह महिने तक अभ्यास कर ! यह कौनसी वस्तु है ? दूसरी चपलता और चंचलता को छोड़कर अंतर में जो सिद्ध सदृश पूर्णानन्द का स्वामी विराजमान है उसका छह महिने अभ्यास कर !

● 'मैं पुण्य-पापरूप हो गया हूँ' - तूने ऐसा मान रखा है; परन्तु वह मैं नहीं हूँ, बस यह मान्यता बदलना है। तेरी फिरी हुई दृष्टि से ही संसार है और 'मैं पुण्य-पापरूप हुआ ही नहीं हूँ' - ऐसी दृष्टि तथा अनुभव करना ही मुक्ति का मार्ग है। ऐसे अंतरस्वीकार को ही मुक्ति का पंथ कहा जाता है।

● मैं तो ज्ञान ज्योति स्वरूप हूँ, जानना-देखना मेरा कार्य है। विकार के परिणामों को छुए बिना-स्पर्श किये बिना अपने अस्तित्व के कारण मैं जानता हूँ। रागादि किसी भी प्रकार से मेरा कार्य नहीं है; इसप्रकार सभी ओर से कर्ताकर्म की प्रवृत्ति का शमन करती हुई ज्ञानज्योति प्रगट होती है, स्फुरायमान होती है। कर्ताकर्म में तो अज्ञानी को विकार का स्फुरण था, चैतन्यज्योति की अंतर्दृष्टि होने पर जो ज्ञानज्योति प्रस्फुरित हुई, वह मेरा कार्य है।

● जीव जिनवर है और जिनवर जीव है - ऐसी दृष्टि हो उसे पर्याय बुद्धि छूट जाती है। सम्यग्दर्शन प्रगट करने के लिये कितने ही गढ़ लाँघकर अंतर में प्रवेश होता है। जिसे संसारभाव किंचित् भी रुचे नहीं; और आत्मा की धुन लगे तब सम्यग्दर्शन होता है।

● भाई ! एकबार के मोह की मिठास छोड़ दे ! जिसप्रकार गुड़ की भेली मिठास से भरपूर है, उसीप्रकार भगवान अमृत की भेली हैं, वहाँ एकबार मति को स्थिर कर ! भाई ! बड़े-बड़े बँगले, उनके फर्नीचर तथा अन्य साधन-सुविधाओं में मति इतनी एककार हो गई है कि मरते समय वह छोड़ना तुझे कठिन लगेगा, इसलिये वहाँ से मति हटा ले !

नवनिर्मित जिनमंदिर

भारत के मध्यप्रदेश क

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिन

(शनिवार, दिनांक 17 जनवरी

कार्यक्रम स्थल : शौरीपुर नगरी, स्टेडि

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि मध्यप्रदेश की धर्मनगरी छिन्दवाड़ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है, जिसमें वीतराग शान्तमुद्रायुक्त नायक श्री 1008 महावीर भगवान एवं श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की अन्तर्मुखी भाववाही मनो महोत्सव के विधिनायक श्री 1008 नेमिनाथ भगवान होंगे। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि पुण्यलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित विमलदादा झांझरी, उज्जैन
पण्डित कपूरचन्दजी जैन, करेली
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री, नागपुर

प्रतिष्ठाचार्य

बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री,
(खनियांधाना-म.प्र.)

निर्देशक

बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री,
(सनावद-म.प्र.)

सह-निर्देशक

पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया, अलीगढ़

ब्र

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्स

प्रेरणास्त्रोत	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	मंत्री	कोषाध्यक्ष	
एड.प्रबोधचन्दजी जैन एवं श्रीमती कुसुमलताजी पाटनी	सवाई सिंघई धन्यकुमार जैन (07162)230332	मोतीलाल जैन (भैय्याजी) (07162)244141	शांतिकुमार पाटनी (07162)245520	अशोक वैभव (07162)245390	विजय कौशल (07162)242447	(अ.भ 94

सम्पर्क सूत्र : अशोक जैन, 'वैभव' गोलगंज, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) फोन (07162) 245390

नोट : छिन्दवाड़ा बस मार्ग से ह्व नागपुर से 125 कि.मी., पिपरीया से 130 कि.मी., जबलपुर से 215 कि.मी. एवं रेल मार्ग से ह्व भोपाल से प्रतिदिन

नोट – कृपया इसे जहाँ से सब देख सकें

की धर्मनगरी छिन्दवाड़ा में

बिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

से शुक्रवार, दिनांक 23 जनवरी, 2004 तक)

यम ग्राउण्ड, बस स्टेण्ड के पास, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

ा नगर में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब
मूलनायक श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की 61 इंच ऊँची दुग्धवत् श्वेत पद्मासन प्रतिमा, शासन
त प्रतिमायें सहस्त्रों साधर्मियों की उपस्थिति में पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी।
दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निज कल्याणार्थ सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर

मार्गदर्शक

. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल', छिन्दवाड़ा

मुख्य परामर्शदाता

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री

(छिन्दवाड़ा ह्व म.प्र.)

व समिति, छिन्दवाड़ा

अध्यक्ष	सचिव	स्वागताध्यक्ष
तरुण पाटनी	दीपकराज जैन	रतनचन्द पाटनी
ा. जैन युवा फैड.)	(अ.भा. जैन युवा फैड.)	राजकुमार जैन
4251 47701	07162-202645	सुरेन्द्रकुमार जैन
		अशोक पाटनी

0 मोबाईल : 98261-28094

ा सायं 5.30 बजे पेंचव्हली फास्ट पैसेंजर 1658 उपलब्ध रहती है।

मांगलिक कार्यक्रम

17 जनवरी - झण्डारोहण, टेपप्रवचन, शांतिजाप, जिनेन्द्र पूजन, शास्त्र प्रवचन,श्री जिनेन्द्र एवं मंगल कलश शोभायात्रा, मण्डप व मंच का उद्घाटन, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

18 जनवरी - **गर्भ कल्याणक के छह माह पूर्व-** इन्द्रप्रतिष्ठाविधि, शोभायात्रा, यागमण्डल विधान, इन्द्रसभा, राजसभा, माता के 16 स्वप्नों का प्रदर्शन।

19 जनवरी - **गर्भ कल्याणक -** इन्द्रसभा एवं राजसभा, सोलह स्वप्नों का फल, जिनमंदिर में वेदी-ध्वज-कलश-शिखर शुद्धि, माता व अष्ट देवियों की तत्त्वचर्चा।

20 जनवरी - **जन्मकल्याणक** - विशाल जुलूस, जन्माभिषेक, इन्द्र-राजसभा, ताण्डव नृत्य, पालना-झूलन।

21 जनवरी - **तपकल्याणक** - श्री नेमिकुमार की बारात, नवभव स्मरण, दीक्षा महोत्सव शोभायात्रा, दीक्षा-विधि, वैराग्य प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

22 जनवरी - **ज्ञानकल्याणक**- मुनि नेमिनाथ का आहार, वनगमन, प्राण-प्रतिष्ठा, समवशरण रचना व दिव्यध्वनि प्रसारण, विद्वत गोष्ठी (सर्वज्ञता और क्रमबद्धपर्याय)।

23 जनवरी - **मोक्षकल्याणक** - गिरनार पर्वत की रचना, जिनमंदिर में श्रीजी विराजमान, चरणस्थापना, जिनवाणी स्थापना शांतियज्ञ, भक्ति संध्या आदि।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 81

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

एक आदमी ने मनुष्यगति में नरकायु का बंध किया, तब पर्याय की दृष्टि से नरकायु बांधने की क्रिया का कर्ता तो मनुष्य है और अगले भव में भोगेगा नारकी। इसप्रकार करे मनुष्य और भोगे नारकी।

यह तो ऐसा ही हुआ कि करे मूँछवाला और पकड़ा जाए दाड़ी– वाला; क्योंकि किया मनुष्य ने था और भोगा नारकी ने।

अतएव आचार्य कहते हैं कि आत्मा को कथंचित् कर्ता–भोक्ता व कथंचित् अकर्ता–अभोक्ता मानो। यदि ऐसा नहीं मानोगे तो तुम सांख्यों या बौद्धों जैसे हो जाओगे।

द्रव्यार्थिकनय से जो कर्ता है, वही भोक्ता है; क्योंकि वह सदाकाल रहता है और पर्यायार्थिकनय से जो करता है, वह भोगता नहीं है; क्योंकि पर्याय एक समय में ही नष्ट हो जाती है।

जबतक हम यह सब नहीं समझते, तबतक आत्मा का ध्यान नहीं हो सकता है।

209 वाँ कलश, इन सब विकल्पों को तोड़कर आत्मा के ध्यान की प्रेरणा देनेवाला कलश है, जो इसप्रकार है –

कर्तुर्वेदयितुश्च युक्तिवशतो भेदोऽस्त्वभेदोऽपि वा
कर्ता वेदयिता च मा भवतु वा वस्त्वेव सचिन्त्यताम्।
प्रोक्ता सूत्र इवात्मनीह निपुणैर्भेत्तुं न शक्या क्वचि–
च्चिच्चिन्तामणिमालिकेयमभितोऽप्येका चकास्त्वेव नः।।209।।

कर्ता–भोक्ता का युक्ति के वश से भेद हो या अभेद हो अथवा कर्ता और भोक्ता दोनों न हों; तुम तो वस्तु का ही अनुभव करो।

जिसप्रकार चतुर पुरुषों के द्वारा डोरे में पिरोयी गई मणियों की माला भेदी नहीं जा सकती; उसीप्रकार आत्मा में पिरोई गई चैतन्यरूप चिन्तामणि की माला भी कभी किसी से भेदी नहीं जा सकती – ऐसी यह आत्मारूपी माला एक ही, हमें सम्पूर्णतया प्रकाशमान हो अर्थात् नित्यत्व, अनित्यत्व आदि के विकल्प छूटकर हमें आत्मा का निर्विकल्प अनुभव हो।

इसके बाद ज्ञाता–ज्ञेय संबंधी प्रकरण आता है।

दीवाल जुदी है और कलई जुदी है। कलई सफेद होती है, तो कलई के पोतने से क्या दीवाल सफेद हो जाती है ?

नहीं। जब कलई बोरे में थी, तब सफेद थी और अब जब वह दीवार पर पुत गई है, तब भी वह कलई ही सफेद है। दीवाल तो जैसी थी, वैसी ही अभी भी है। दीवाल तो कलई से भिन्न ही है।

जैसे सफेद कपड़ा पहनने से कोई व्यक्ति सफेद नहीं हो जाता; उसीप्रकार दीवाल पर भी कलई की सफेद चादर डाल देने से दीवाल सफेद नहीं हो जाती है। जो सफेदी हमें दिखाई देती है, वह तो कलई की ही है, दीवाल की नहीं। दीवाल तो कलई के पोतने से पूर्व जैसी थी, अभी भी वैसी ही है।

उसीप्रकार ज्ञेयों को जानने से ज्ञान ज्ञेयरूप नहीं हो जाता। ज्ञान तो ज्ञानरूप ही रहता है। ज्ञेय भी जानने में आने से ज्ञानरूप नहीं हो जाते, ज्ञेयरूप ही रहते हैं। जानने या जानने में आने से ज्ञान और ज्ञेय में कोई अन्तर नहीं आता। ज्ञान ज्ञेय को जानता है, तब भी ज्ञान ज्ञान ही है और ज्ञेय को नहीं जानता है, तब भी ज्ञान ज्ञान ही है; ज्ञेयों को जानने या नहीं जानने से ज्ञान के ज्ञानत्व में कोई अन्तर नहीं आता।

शुद्धनय की दृष्टि से तत्त्व का स्वरूप विचार करने पर अन्य द्रव्य का अन्य द्रव्य में प्रवेश दिखाई नहीं देता। ज्ञान में अन्य द्रव्य प्रतिभासित होते हैं; वह तो ज्ञान की स्वच्छता का स्वभाव है। ज्ञान उन्हें स्पर्श नहीं करता। ऐसा होने पर भी, ज्ञान में अन्य द्रव्यों का प्रतिभास देखकर लोग ऐसा मानते हुए ज्ञान–स्वरूप से च्युत होते हैं कि ज्ञान का परज्ञेयों के साथ परमार्थ संबंध है – यह उनका अज्ञान है। उन पर करुणा करके आचार्यदेव कहते हैं कि वे लोग तत्त्व से क्यों च्युत हो रहे हैं ?

ज्ञान ज्ञेय को जानता है, यह तो ज्ञान के शुद्ध स्वभाव का उदय है। पर को जानने से ज्ञान विकृत नहीं होता है। फिर भी लोग ज्ञान को अन्य द्रव्य के साथ स्पर्श होने की मान्यता से आकुल बुद्धिवाले होते हुए तत्त्व से या शुद्धस्वरूप से क्यों च्युत होते हैं ? ऐसा कहकर आचार्यदेव आश्चर्य व्यक्त करते हैं।

लोगों को ऐसा लगता है कि जिसप्रकार अपवित्रा वस्तु के छू लेने से हम अपवित्रा हो जाते हैं; वैसे ही परज्ञेयों को जानने से ज्ञान अपवित्रा हो जायेगा; पर उनकी यह धारणा एकदम गलत है; क्योंकि ज्ञेयों को जानने से ज्ञान में कोई अपवित्राता नहीं आती।

पुनः इसी अर्थ को दृढ़ करनेवाला कलशकाव्य कहते हैं –

शुद्धद्रव्यस्वरसभवनात्किं स्वभावस्य शेष–
मन्यद्द्रव्यं भवति यदि वा तस्य किं स्यात्स्वभावः?
ज्योत्स्नारूपं स्नपयति भुवं नैव तस्यास्ति भूमि–
र्ज्ञानं ज्ञेयं कलयति सदा ज्ञेयमस्यास्ति नैव।।216।।

शुद्ध द्रव्य का निजरसरूप परिणमन होता है, इसलिए क्या कोई अन्य द्रव्य उस स्वभाव का हो सकता है अथवा क्या वह किसी अन्य द्रव्य का हो सकता है ? चाँदनी का रूप पृथ्वी को उज्ज्वल करता है; तथापि पृथ्वी चाँदनी की कदापि नहीं होती। इसप्रकार ज्ञान ज्ञेय को सदा जानता है, तथापि ज्ञेय ज्ञान का कदापि नहीं होता।

इसी आशय को किसी कवि ने इसप्रकार व्यक्त किया है–

भूमि न होत चाँदनी की ज्यों, त्यों नहिं धनी ज्ञेय को ज्ञानी।
दहन दहत पर गगन न तद्गत गगन दहनता की विधि हानी।।

जैसे चाँदनी की भूमि नहीं होती है, उसीप्रकार ज्ञेय को जाननेवाला ज्ञान ज्ञेय का मालिक नहीं होता है।

जिसप्रकार अग्नि जलती है, पर वहाँ उपस्थित आकाश

द्रव्य नहीं जलता है। अग्नि का स्वभाव जलना है; इसलिए वह जलती है। आकाश का स्वभाव जलने का नहीं है, इसलिए वह नहीं जलता है। उसीप्रकार ज्ञान ज्ञेय का नहीं हुआ; क्योंकि उसका ऐसा ही स्वभाव है। ज्ञान का पर को जानने का तो स्वभाव है, किन्तु उसे अपना बनाने का स्वभाव नहीं है। आत्मा पर को जानने से नहीं, पर को अपना मानने से विकृत होता है।

सबको जाननेरूप जो स्वभाव है, अर्थात् सर्वज्ञत्वशक्ति है, वह पारिणामिकभाव है, क्षायिकभाव नहीं; क्योंकि वह किसी कर्म के उदय से नहीं है, न ही कर्म के क्षय से और न कर्मों के क्षयोपशम से है। स्व–पर को जानने का जो स्वभाव है, वह उसकी स्वयं की संपत्ति है और जब बाधककारण का अभाव हो जाता है, तब वह संपत्ति सहज ही प्रगट हो जाती है।

अतएव आचार्य कहते हैं कि हे जैनियों ! तुम सांख्यमत के समान आत्मा को सर्वथा अकर्ता मत मानो और बौद्ध के समान कर्ता और भोक्ता में अंतर मत मानो। यही सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार का प्रतिपाद्य विषय है।

आचार्य कहते हैं कि यह मानो कि जो करे, सो कथंचित् भोगे और कथंचित् न भोगे; क्योंकि जो पर्याय करती है, वह भोगती नहीं है और जो पर्याय भोगती है, वह पर्याय करती नहीं है – यह कथन पर्याय की अपेक्षा है और जो करे, वही भोगे – यह कथन द्रव्य की अपेक्षा है; इसलिए जो द्रव्य करता है, वही भोगता है।

जगत में ऐसा कहा जाता है कि अपराध जीभ करती है, गालियाँ जीभ देती है और पिटाई माथे की होती है। इससे तो ऐसा हो जाता है कि करे कोई और भोगे कोई। इसी बात को इसप्रकार भी तो प्रस्तुत किया जा सकता है कि जिसकी जबान है, उसी के माथे की ही तो पिटाई होती है। इससे जो करे, सो भोगे – यह भी हो गया और करे कोई व भोगे कोई – यह भी हो गया – यही जैनदर्शन की अपेक्षा है।

इसलिए सर्वथा ऐसा भी मत मानो कि जो करता है, वह भोगता है और सर्वथा ऐसा भी मत मानो कि कर्ता कोई अन्य है और भोक्ता कोई अन्य।

लोक में तो ऐसा भी कथन है कि बाप–दादाओं की खा रहे हैं और बाप–दादाओं को भोग रहे हैं; लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

(क्रमशः)

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठीय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/– रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) से प्राप्त की जा सकती है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

रविवारीय गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

जयपुर : 1. यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में दिनांक 30 नवम्बर 2003 को **छहढाला : एक अनुशीलन** विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने की। गोष्ठी का संचालन कस्तूरचन्दजी शास्त्री खड़ैरी एवं संयोजन प्रशांत जैन मौ ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पंकज दहातोण्डे तथा परिणति पाटील को चुना गया।

2. यहीं पर दिनांक 7 दिसम्बर 2003 को **तत्त्वार्थसूत्र** विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर ने की। गोष्ठी का संचालन विजय बोरालकर तथा संयोजन आशीष जैन बिनौता ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सी.बाबू तमिलनाडू तथा अनुप्रेक्षा जैन को चुना गया। **ह्न नीरज जैन**

धवला ग्रन्थ पर स्वाध्यायमाला प्रारंभ

मुम्बई : विदुषी डॉ. उज्ज्वलाजी शहा, मुम्बई द्वारा अपने निवास स्थान पर धवला ग्रन्थ पर स्वाध्यायमाला प्रारंभ की गयी है; जिसका समय प्रातः 8.30 से 10.00 बजे तक रखा गया है। इन प्रवचनों की सी. डी. कॅसिट्स भी तैयार की जा रही है। जो भी महानुभाव इसका लाभ लेना चाहते हो, वे निम्न पते पर सम्पर्क करें तथा स्थानीय साधर्मी जन इस योजना का अधिक से अधिक लाभ लेवें। **पता :** श्री दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (वे.), मुम्बई –22, फोन. 24073581

प्रदीपजी झांझरी एवं जम्बू जैन 'धवल' सम्मानित

उज्जैन : यहाँ दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप के तत्त्वावधान में आयोजित विशाल जैन महोत्सव के अन्तर्गत सांस्कृतिक सन्ध्या एवं अवार्ड नाईट सम्पन्न हुई; जिसमें दिगम्बर जैन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ उपलब्धियाँ अर्जित करनेवाले 12 महानुभावों को सम्मानित कर उनकी विभिन्न सेवाओं के लिए अवार्ड प्रदत्त किया गया।

आयोजन के अन्तर्गत अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा उज्जैन के अध्यक्ष पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी को **श्रेष्ठ धर्मप्रचारक** एवं मंत्री श्री जम्बू जैन धवल को **श्रेष्ठ मंच संचालक** की उपाधि प्रदत्त की गई।

समारोह के अध्यक्ष एस.पी. श्री उपेन्द्र जैन तथा मुख्य अतिथि दि. जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या थे। **ह्न सुरेन्द्र जैन**

शुभकामनायें !

● श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया के सुपुत्र श्री नरेशकुमारजी लुहाड़िया की सुपुत्री सौ. कां. अनुभूति एवं चि. समीर जैन सुपुत्र श्री अशोककुमारजी जैन का शुभ विवाह दिनांक 6 नवम्बर, 2003 को सम्पन्न हुआ।

● श्री नरेशकुमारजी के ही सुपुत्र चि. आकिंचन जैन एवं सौ. कां. नम्रता सुपुत्री श्री राजीवजी जैन का शुभ विवाह 22 नवम्बर को दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

● श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया के सुपौत्र व श्री विनयचन्दजी लुहाड़िया के सुपुत्र चि. श्रेणिक जैन एवं सौ. शानू (मेघा) का शुभ विवाह मुम्बई में दिनांक 2 दिसम्बर, 2003 को सम्पन्न हुआ।

इन विवाहों के उपलक्ष्य में भेटस्वरूप 1000 रुपयों की राशि प्राप्त हुई। जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक शुभकामनायें !

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2003-04

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 30 जनवरी 2004	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (बरैयाजी) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 31 जनवरी 2004	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 02 फरवरी 2004	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है। (2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें। (3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है। (4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

ध्यान दें - पिछले अंक में परीक्षा तिथियाँ 27, 28 एवं 30 जनवरी प्रकाशित की गई थी; किन्तु उक्त तिथियों को ही सही समझें।

- प्रबंधक, परीक्षा विभाग

पंच परमेष्ठी विधान सम्पन्न

डूंगरपुर (राज.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन चैत्यालय में स्व. श्री माणकचन्दजी देवचन्दजी भदावत की स्मृति एवं पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में दिनांक 16 नवम्बर को पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ।

इस एक दिवसीय कार्यक्रम में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका तथा पण्डित मोहितजी शास्त्री अरथूना के एक-एक प्रवचन का लाभ मिला।

विधि-विधान के कार्य पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी डडूका ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध जैन कहानीकार श्री जयन्तिलालजी जैन, नौगामा का समाज द्वारा अभिनन्दन किया गया। **- पं. लक्ष्मीचन्दजी जैन**

सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की नवीनतम कृति **समयसार का सार** नामक ग्रन्थ पक्की बाइण्डिंग, पृष्ठ-400, कीमत-25/-रुपये श्रीमती पुष्पाबेन कांतिभाई मोटाणी, मुम्बई की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, वाचनालयों एवं सद्गृहस्थों को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट की जा रही है।

इच्छुक महानुभाव डाकखर्च के लिये 6/-रु. (अक्षरेण छह रुपये) के फ्रेश डाक टिकिट भेजकर नि:शुल्क मंगा लेवें।

ध्यान रहे, टिकिट भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 04 है।

पता- प्रबंधक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग,
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.)

वार्षिक रिपोर्ट शीघ्र भेजें

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 25 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2003 तक सिद्धायतन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में आयोजित होने जा रहा है। फैडरेशन की जिन शाखाओं ने अभी तक अपनी वार्षिक रिपोर्ट नहीं भेजीं हैं, वे शीघ्रातिशीघ्र अपनी वार्षिक रिपोर्ट केन्द्रीय कार्यालय जयपुर को भेजें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) दिसम्बर (द्वितीय) 2003

J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127